Q4. भारत में बेरोजगारी के कारणों पर प्रकाश डालें। समस्या के समाधान के उपाय बतायें।

→ उचित ढंग से अपना जीवन यापन करने हेतु जिन लोगों को रोजगार की इच्छा आवश्यकता व योग्यता होते हुए भी रोजगार नहीं मिल पाता उन्हें बेरोजगार कहा जाता है और उनकी यह स्थिति बेरोजगारी कहलाती है।

निःसंदेह देश में बेरोजगारी की स्थिति बहुत गंभीर है और इस समस्या का समाधान हर दृष्टि से बहुत आवश्यक है। बेरोजगारी दूर करने के लिए इसके कारणों की जानकारी आवश्यक है। मूलतः भारत में बेरोजगारी का कारण एक ही है वह है विकास का अभाव अथवा धीमी दर। यदि देश का समग्र रूप से विकास नहीं होता है तो ये समस्या न केवल बनी रहेगी बल्कि समय के साथ और बढ़ती जाएगी। इस मूल कारण के अलावे कुछ अन्य कारण भी हैं जो बेरोजगारी को लाने एवं बढ़ाने में सहायक रहे हैं। बेरोजगारी के संप्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

Scanned with CamScanner

(i) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि :- गत शताब्दी में देश की जनसंख्या में अत्यंत तीव्र गति से वृद्धि हुई है। विशेष रूप से 1951 से। देश की जनसंख्या में प्रति वर्ष 1.5 करोड़ से भी ज्यादा की वृद्धि हो जा रही है लेकिन इसी अनुपात में रोजगार के नवीन अवसरों का सृजन नहीं हो पा रही है फलतः बेरोजगारों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती ही जा रही है।

यदि देश में विकास की दर तेज होती और यदि योजनाएँ भलि प्रकार रोजगार मूलक होती तो रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध होते तथा स्थिति इतनी भयावह नहीं होती है। फिर भी यह कहना सही है कि रोजगार सृजन की दर उतनी ऊँची नहीं हो सकती थी जितनी की वर्तमान जनसंख्या वृद्धि की दर रही है।

(ii) लघु व कुटीर उद्योगों का पतन :- भारत में ब्रिटिश सरकार के 200 वर्षों के शासन के दौरान उन्नत भारतीय लघु व कुटीर उद्योगों का पतन होता गया। ब्रिटिश सरकार की शोषण पूर्ण नीति के कारण भारतीय दस्तकारों को अपना व्यवसाय छोड़ना पड़ा। श्रम प्रधान होने के कारण इन उद्योगों का रोजगार की दृष्टि से विशेष महत्व था। स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद भी पंचवर्षिय योजनाओं में लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास पर ध्यान नहीं दिया गया। फलतः बेरोजगारी बढ़ती ही गई।

Scanned with CamScanner

(iii) गैर कृषि व्यवसायों की सीमित रोजगार सृजन क्षमता :- भारतीय अर्थव्यवस्था में जहाँ कृषि पर जनसंख्या का दबाव पहले से ही अधिक था गैर कृषि व्यवसायों को रोजगार के पर्याप्त अवसर सृजित करने का दायित्व पूरा करना चाहिए था। किन्तु भारतीय अर्थव्यवस्था के उद्योग व सेवा क्षेत्र इस दायित्व का निर्वाह करने में अक्षम रहे।

(iv) दोषपूर्ण आर्थिक नियोजन :- भारत में 1951 ई० से आर्थिक नियोजन प्रारंभ हुआ परन्तु इसमें सिर्फ उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान दिया गया इससे रोजगार के नवीन अवसर भी सृजित हो सके ऐसी कोशिश नहीं की गई। फलतः समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है।

(v) सामाजिक कारक :- अपनी विशिष्ट संरचना के कारण भारतीय समाज रोजगार प्राप्ती में बाधा उत्पन्न करता है। यहाँ श्रम को हेय दृष्टि से देखा जाता है लोग बेरोजगार रहना पसंद करते हैं अपितु को सामान्य श्रेणी के रोजगारों को अपनाने को।

भारत में बेरोजगारी की समस्या अत्यंत भयावह है इसके निदान हेतु समग्र प्रयास की आवश्यकता सिर्फ सरकार के भरोसे इस समस्या को समाधान के लिए नहीं छोड़ा जा सकता है। इस समस्या के समाधान के प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं—

(i) निवेश ढांचे में सुधार :- देश में निवेश की योजनाओं को परावर्तित कर रोजगार मूलक बनाए जाने की आवश्यकता है। साथ ही योजनाओं में तकनिक चयन के समय हमें ऐसी तकनिक को प्रधानता देनी चाहिए जो कुशल होने के साथ-साथ श्रम प्रधान भी हो।

(ii) छोटे व कुटीर उद्योगों का विकास :- देश में इन उद्योगों के विकास

Scanned with CamScanner

हेतु विस्तृत क्षेत्र विद्यमान है। श्रम गहन होने के कारण इनकी रोजगार सृजन क्षमता बहुत अधिक होती है। अतः इनके विकास द्वारा बेरोजगारी की समस्या को बहुत हद तक दूर किया जा सकता है।

(iii) विशेष रोजगार कार्यक्रम :- रोजगार कार्यक्रमों द्वारा लोगों को प्रशिक्षण दे कर उन्हें रोजगार प्राप्त करने में सहायता दी जाती है जिससे बेरोजगारी पर अंकुश लगाना संभव हो सका है।

(iv) संसाधनों का भरपूर प्रयोग :- उपलब्ध संसाधनों का अधिकाधिक प्रयोग कर बेरोजगारी की समस्या को बहुत हद तक दूर किया जा सकता है, क्योंकि उत्पादन हेतु श्रम की आवश्यकता पड़ेगी ही।

(v) जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण